Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue2, Feb 2026, pp. 16-22 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.14
Available online at: https://vijact.com/

निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक रूपरेखा का शिक्षक सशक्तिकरण पर प्रभाव एवं निहित चुनौतियाँ

खूब चन्द्र [1] एवं प्रो० तिर्मल सिंह [2]

[1]*शोधार्थी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ*
[2]*आचार्य, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ*

Article Info

Article history:
Received Feb 11, 2026
Accepted Feb 19, 2026
Published Feb 28, 2026

Keywords:
निष्ठा कार्यक्रम
शिक्षक सशक्तिकरण
शिक्षक प्रशिक्षण
व्यावसायिक विकास
शैक्षिक गुणवत्ता
क्षमता निर्माण
समावेशी शिक्षा
शिक्षण कौशल

ABSTRACT

यह शोध पत्र शिक्षक सशक्तिकरण के लिए निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक रूपरेखा का विश्लेषण करता है जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता सुधार हेतु शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को संस्थागत रूप देना है। निष्ठा भारत सरकार द्वारा 2019 में शुरू किया गया एक राष्ट्रीय स्तर का शिक्षक प्रशिक्षण अभियान है। इसका लक्ष्य शिक्षकों की दक्षता, आत्मविश्वास और नवाचार क्षमता को विकसित करना तथा विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ करना है। निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक नींव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांतों पर आधारित है । यह मुख्यतः रचनावाद और अनुभवजन्य शिक्षाशास्त्र, समावेशी शिक्षा, समग्र विकास और बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के दर्शन पर केंद्रित है । यह शिक्षकों को ज्ञान-प्रदाता के बजाय ज्ञान-निर्माता और मार्गदर्शक की भूमिका अपनाने के लिए प्रेरित करता है। शैक्षणिक रिपोर्टों और सरकारी दस्तावेजों के आंकड़ों के आधार पर यह परिणाम प्राप्त हुआ कि निष्ठा कार्यक्रम ने शिक्षकों में डिजिटल दक्षताओं, छात्रकेंद्रित शिक्षण दृष्टिकोण और मूल्य-आधारित शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया है। इसके परिणामस्वरूप विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, शिक्षकों की आत्मसंतुष्टि तथा शिक्षण में नवाचार-प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है । हालांकि डिजिटल अवसंरचना की कमियाँ, प्रशिक्षण सामग्री की प्रासंगिकता और कार्यभार जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
खूब चन्द्र
Email: 1197khoob@gmail.com

1. परिचय

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार होती है और शिक्षक उस आधार के प्रमुख स्तंभ हैं। भारत जैसे विकासशील देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास अत्यावश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने शिक्षकों को शिक्षा-परिवर्तन का केंद्रबिंदु मानते हुए उनके समग्र विकास पर बल दिया है। इसी संदर्भ में भारत सरकार द्वारा 2019 में प्रारंभ किया गया निष्ठा कार्यक्रम (स्कूल प्रधानाचार्यों और शिक्षकों के समग्र उन्नयन के लिए राष्ट्रीय पहल) का उद्देश्य शिक्षकों के ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाकर विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ करना है। इस कार्यक्रम की पृष्ठभूमि में यह विचार निहित है कि सशक्त शिक्षक ही सशक्त शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं। निष्ठा कार्यक्रम शिक्षकों को शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा, समावेशी कक्षा प्रबंधन, डिजिटल साक्षरता, जीवन कौशल और मूल्य आधारित शिक्षा की दिशा में प्रशिक्षित करता है। किंतु भारतीय शिक्षा प्रणाली में लंबे समय से शिक्षक प्रशिक्षण में एकरूपता, व्यावहारिकता की कमी तथा प्रशिक्षण के प्रभाव के मूल्यांकन से जुड़ी चुनौतियाँ बनी रही हैं जिससे प्रशिक्षण के

परिणाम कक्षा शिक्षण तक नहीं पहुँच पाते। इस शोध का उद्देश्य निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक रूपरेखा को स्पष्ट करना, उसके कार्यान्वयन की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना तथा यह मूल्यांकन करना है कि यह कार्यक्रम शिक्षक सशक्तिकरण और शिक्षा गुणवत्ता संवर्धन में किस प्रकार योगदान देता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षा अधिकारियों और शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध होगा क्योंकि यह दर्शाता है कि संगठित प्रशिक्षण ढाँचा कैसे शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता, प्रेरणा और आत्मनिर्भरता को बढ़ाकर शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता में स्थायी सुधार ला सकता है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

भारत में शिक्षक सशक्तिकरण एवं प्रशिक्षण से संबंधित नीतियाँ सदैव शिक्षा-गुणवत्ता सुधार की आधारशिला रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (भारत सरकार, 2020) में शिक्षकों को परिवर्तन के वाहक के रूप में स्थापित करते हुए उनके सतत व्यावसायिक विकास पर बल दिया गया है। (एनसीईआरटी, 2021) के अनुसार यह कार्यक्रम शिक्षकों में व्यावसायिक दक्षता, आत्मविश्वास और नवाचार क्षमता को विकसित करने के लिए एक एकीकृत पहल है। शिक्षक सशक्तिकरण की अवधारणा को राव एवं राव (2018) ने संगठित प्रशिक्षण, संसाधन पहुँच एवं स्वायत्तता के रूप में व्याख्यायित किया है जो शिक्षक को निर्णय लेने और शिक्षण में नवाचार के लिए सक्षम बनाती है। इसी दिशा में (कुमार और शर्मा, 2020) ने अपने अध्ययन में पाया कि सतत प्रशिक्षण एवं ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म जैसे दीक्षा के माध्यम से शिक्षकों में आत्मप्रेरणा और तकनीकी दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक रूपरेखा रचनावादी शिक्षण सिद्धांत पर आधारित है।जहाँ शिक्षक सीखने के सहायक की भूमिका निभाता है न कि केवल ज्ञान-संचारक। (पियाजे, 1973) तथा (व्यागोत्सकी, 1978) के सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धांत ने इस दृष्टिकोण को सुदृढ़ आधार प्रदान किया जिससे अभ्यास-आधारित शिक्षण को बल मिला। (मिश्रा और बंसल, 2022) के अनुसार निष्ठा कार्यक्रम में शामिल शिक्षकों ने शिक्षण-पद्धति, मूल्यांकन प्रक्रिया तथा विद्यार्थियों की भागीदारी में उल्लेखनीय सुधार की सूचना दी। परिणामस्वरूप शिक्षार्थियों में भाषा, गणित एवं विज्ञान विषयों में सीखने के परिणाम बेहतर पाए गए। इसी प्रकार (चटर्जी, 2021) के शोध में पाया गया कि निष्ठा प्रशिक्षण ने प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों में मल्टीमीडिया उपयोग, सहयोगात्मक शिक्षण और कक्षा प्रबंधन कौशल को सशक्त किया।

3. निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक रूपरेखा

निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक नींव शिक्षा के एक प्रगतिशील दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दूरदर्शी सिद्धांतों में निहित है। इसका उद्देश्य केवल शिक्षकों को प्रशिक्षित करना नहीं है बल्कि उन्हें एक सशक्त, चिंतनशील और बाल-केंद्रित पेशेवर बनाना है। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख सिद्धांतों और लक्ष्यों को ज़मीन पर उतारने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आवश्यकताओं के अनुरूप ही विकसित किया गया है। यह कार्यक्रम निम्न शिक्षा दर्शन पर आधारित है।

- **रचनावाद और अनुभवजन्य शिक्षाशास्त्र:** कार्यक्रम इस विश्वास पर केंद्रित है कि बच्चे निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते बल्कि वे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह शिक्षकों को शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र अपनाने के लिए प्रेरित करता है जिसमें गतिविधि-आधारित शिक्षण, खेल-आधारित शिक्षण, और खोज-आधारित शिक्षण पर जोर दिया जाता है। इसका लक्ष्य पारंपरिक "बताओ और सुनाओ" पद्धति को सहभागिता और अनुभव पर आधारित शिक्षण से बदलना है।
- **समावेशी शिक्षा:** निष्ठा यह सुनिश्चित करने पर बल देता है कि सभी बच्चों को उनकी पृष्ठभूमि या क्षमता की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। यह शिक्षकों को विविध आवश्यकताओं वाले बच्चों (विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित) को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए समावेशी कक्षा वातावरण बनाने और विभिन्न शिक्षाशास्त्रों का उपयोग करने का प्रशिक्षण देता है।
- **समग्र विकास:** इसका दर्शन शिक्षकों और छात्रों दोनों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास को महत्व देता है। यह शिक्षकों को छात्रों में परवर्ती चिंतन, रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करता है जो उन्हें 21वीं सदी के लिए तैयार करता है।

- **शिक्षकों का व्यावसायिक विकास:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के निरंतर व्यावसायिक विकास पर विशेष जोर दिया गया है । निष्ठा इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक मानकीकृत और व्यापक मंच प्रदान करता है।
- **स्कूल नेतृत्व और प्रबंधन:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूलों के प्रभावी नेतृत्व को शिक्षा की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। निष्ठा कार्यक्रम में विद्यालय प्रमुखों की नेतृत्व क्षमता के विकास पर विशेष मॉड्यूल शामिल हैं जो उन्हें एक प्रेरक और सहयोगी स्कूल संस्कृति बनाने में मदद करते हैं।
- **कक्षा शिक्षाशास्त्र में परिवर्तन:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित अनुभवात्मक शिक्षण, आलोचनात्मक चिंतन और बहु--विषयक दृष्टिकोण जैसे शिक्षाशास्त्रीय परिवर्तनों को निष्ठा प्रशिक्षण मॉड्यूल में एकीकृत किया गया है जिससे शिक्षक नीति के अनुरूप अपनी कक्षा प्रथाओं को बदल सकें।
- **क्षमता-आधारित शिक्षण:** क्षमता आधारित शिक्षण इस बात पर ज़ोर देता है कि छात्र ने क्या सीखा है? वह उस ज्ञान को वास्तविक जीवन की स्थितियों में कैसे लागू कर सकता है? न कि केवल यह कि उसने पाठ्यक्रम को कितना याद किया है? पारंपरिक शिक्षा प्रणाली जो मुख्य रूप से विषय-वस्तु को रटने और योगात्मक मूल्यांकन पर आधारित थी अब क्षमता-आधारित शिक्षण की ओर स्थानांतरित हो रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भी लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा 3 तक सभी बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसे मूलभूत कौशलों को प्राप्त कर लें।
- **बाल केंद्रित शिक्षा:** यह वह दृष्टिकोण है जहाँ शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया बच्चे की रुचियों, क्षमताओं, अनुभवों और सीखने की गति पर आधारित होती है। यह शिक्षक को एक मार्गदर्शक और सह-शिक्षार्थी की भूमिका में रखता है। यह पद्धति बच्चों की अभिव्यक्ति और सक्रिय भागीदारी को महत्व देती है। उन्हें स्वयं की गति से सीखने की अनुमति देती है और उन्हें अपनी अधिगम की रणनीति बनाने के अवसर प्रदान करती है। इसका अंतिम उद्देश्य हर बच्चे की उत्कृष्ट क्षमताओं को पहचानना और बढ़ावा देना है।
- **एकीकृत शिक्षा:** इस प्रकार की शिक्षा में विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्रों (जैसे- गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन) की विषय वस्तु को सीखने-सिखाने के साथ कला (दृश्य और प्रदर्शन कलाएँ) को जोड़ दिया जाता है। इसका उद्देश्य विषयों को आनंददायक, अनुभवात्मक और रुचिकर बनाना है।
- **स्कूल आधारित मूल्यांकन:** स्कूल आधारित मूल्यांकन एक समग्र, बहुआयामी और निरंतर मूल्यांकन की प्रक्रिया है जो छात्र के बहु-आयामी व्यक्तित्व का आकलन करती है। इसका मुख्य उद्देश्य परीक्षा के डर को कम करना और सीखने के लिए मूल्यांकन को बढ़ावा देना है। यह परिणामों की अपेक्षा रचनात्मक प्रतिपुष्टि पर केंद्रित होता है। इसमें छात्रों का स्व-आकलन और सहकर्मी आकलन भी शामिल होता है। यह छात्रों को रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करके सीखने में सुधार करता है।

4. निष्ठा कार्यक्रम का लक्ष्य समूह

निष्ठा कार्यक्रम को प्रमुखतः तीन लक्ष्य समूहों में विभाजित किया गया है-प्राथमिक लक्ष्य समूह, द्वितीय लक्ष्य समूह तथा तृतीय लक्ष्य समूह। प्राथमिक लक्ष्य समूह में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षक शामिल हैं जिन्हें विषय-विशेष और बाल-केंद्रित शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रधानाध्यापकों को नेतृत्व, विद्यालय प्रबंधन और अभिभावक सहभागिता पर प्रशिक्षित किया जाता है। द्वितीयक लक्ष्य समूह में ब्लॉक, क्लस्टर और जिला शिक्षा अधिकारी शामिल हैं जो प्रशिक्षण के बाद निरीक्षण और फॉलो-अप का कार्य करते हैं। साथ ही डायट, एससीईआरटी, बीआरसी/सीआरसी के प्रशिक्षकों को नवीन शिक्षण सामग्री और मूल्यांकन प्रणालियों का प्रशिक्षण दिया जाता है। तृतीयक लक्ष्य समूह में विशेष शिक्षण आवश्यकताओं वाले बच्चों के शिक्षकों, डिजिटल शिक्षण प्रशिक्षकों तथा समुदाय और अभिभावकों को अप्रत्यक्ष रूप से शामिल किया गया है। ताकि शिक्षा अधिक समावेशी, तकनीक-आधारित और सहभागी बन सके।

5. निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक संरचना में निहित शिक्षक सशक्तिकरण पर प्रभाव एवं चुनौतियाँ

5.1 प्रभाव

शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली की धुरी हैं। जब शिक्षक सशक्त होते हैं तभी शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का समग्र विकास सार्थक होता है। इसी विचार को साकार करने के लिए भारत सरकार ने 2019 में निष्ठा कार्यक्रम प्रारंभ किया जिसका उद्देश्य शिक्षकों को व्यावसायिक, मनोवैज्ञानिक और तकनीकी रूप से सशक्त बनाना है। निष्ठा कार्यक्रम ने शिक्षक सशक्तिकरण के सभी आयामों जैसे व्यावसायिक दक्षता, नेतृत्व विकास, आत्मविश्वास, डिजिटल साक्षरता एवं नवाचारी शिक्षण पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। इसके प्रमुख प्रभावों का विश्लेषण निम्नलिखित है।

- **व्यावसायिक सशक्तिकरण पर प्रभाव:** निष्ठा कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षकों को नवीन शिक्षण पद्धतियों, विषयवस्तु की गहन समझ, मूल्यांकन प्रणाली और शिक्षण परिणामों पर केंद्रित रणनीतियों का प्रशिक्षण दिया गया। इससे शिक्षकों की पेशेवर दक्षता में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है। प्रशिक्षण के पश्चात शिक्षक अपने शिक्षण की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम नियोजन और अधिगम परिणामों को प्रभावी रूप से मापने में सक्षम हुए। इस प्रकार निष्ठा कार्यक्रम ने शिक्षक के "ज्ञान-प्रदाता से ज्ञान-निर्माता" बनने की दिशा में बड़ा परिवर्तन किया है।
- **शिक्षण व्यवहार में परिवर्तन:** निष्ठा कार्यक्रम का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार पर देखा गया है। अब शिक्षक विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण को प्राथमिकता देने लगे हैं। वे विद्यार्थियों की रुचि, अनुभव, और पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए कक्षा की रूपरेखा तैयार करते हैं। पारंपरिक रटने वाली शिक्षण शैली की जगह अब प्रयोगात्मक, संवादात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षण अपनाया जा रहा है।इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक सहभागितापूर्ण और प्रभावी बनी है।
- **डिजिटल साक्षरता और तकनीकी सशक्तिकरण:** निष्ठा कार्यक्रम ने शिक्षकों में डिजिटल साक्षरता का एक नया अध्याय जोड़ा है। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों को दीक्षा पोर्टल, निष्ठा ऐप और विभिन्न ई-संसाधनों का उपयोग सिखाया गया। शिक्षक अब स्वयं ई-कंटेंट तैयार कर ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित कर रहे हैं। आईसीटी उपकरणों का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना रहा है। इससे ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों में तकनीकी आत्मनिर्भरता विकसित हुई है।
- **नेतृत्व क्षमता में वृद्धि:** निष्ठा कार्यक्रम ने शिक्षकों को केवल शिक्षण तक सीमित नहीं रखा बल्कि उन्हें विद्यालयी नेतृत्व की दिशा में भी प्रेरित किया। प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों को विद्यालय प्रबंधन, टीम वर्क एवं सामुदायिक सहभागिता के कौशल सिखाए गए। अब शिक्षक विद्यालय की निर्णय-प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने लगे हैं। शिक्षकों ने विद्यालय विकास योजना, समय-सारिणी निर्माण और संसाधन प्रबंधन में सहयोग देना शुरू किया है।
- **मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण:** निष्ठा कार्यक्रम ने शिक्षकों के आत्मविश्वास, आत्म-संतुष्टि और कार्य-प्रेरणा पर गहरा प्रभाव डाला है। प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों में पेशेवर गर्व और आत्म-सम्मान की वृद्धि देखी गई। इस मानसिक परिवर्तन ने शिक्षक के व्यवहार और विद्यार्थियों के साथ उनके संबंधों में भी सकारात्मक ऊर्जा भरी है।
- **समावेशी शिक्षा में योगदान:** निष्ठा कार्यक्रम ने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा पर विशेष बल दिया है।शिक्षकों को समावेशी कक्षा प्रबंधन, भेदभाव रहित व्यवहार और सहायक शिक्षण तकनीकों की जानकारी दी गई। इससे शिक्षा प्रणाली में समानता और न्याय की भावना को बढ़ावा मिला है।समावेशी शिक्षा की यह अवधारणा शिक्षक सशक्तिकरण की मानवीय संवेदना का प्रतीक है।
- **पेशेवर संतुष्टि एवं प्रेरणा में वृद्धि:** निष्ठा कार्यक्रम के बाद शिक्षकों में कार्य के प्रति नई ऊर्जा और उत्साह देखा गया है। प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक अपने कार्य को अधिक सार्थक और रचनात्मक अनुभव करने लगे हैं। उन्हें यह अनुभव हुआ कि उनके विचारों और प्रयासों को संस्थागत स्तर पर मान्यता मिल रही है।इससे पेशेवर संतुष्टि और आत्म-प्रेरणा में वृद्धि हुई है।

- **विद्यालय वातावरण में परिवर्तन:** निष्ठा कार्यक्रम के प्रभाव से विद्यालयों में शिक्षण-अधिगम का वातावरण अधिक सकारात्मक हुआ है। शिक्षक अब विद्यार्थियों के साथ संवादशील, सहानुभूतिपूर्ण और प्रेरणादायक भूमिका निभा रहे हैं। विद्यालयों में गतिविधि-आधारित अधिगम, समूह कार्य, और नवाचार को बढ़ावा मिला है। शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों के बीच सहयोग एवं संवाद ने विद्यालय को "सीखने वाले संगठन" का स्वरूप दिया है।

5.2 चुनौतियाँ

यह कार्यक्रम शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, नवीन शिक्षण पद्धतियों, बालकेंद्रित शिक्षा और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने पर केंद्रित है परंतु इसके सफल क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ सामने आई हैं जो शिक्षक सशक्तिकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। प्रमुख चुनौतियों को निम्न रूप में समझा जा सकता है।

- **प्रशिक्षण की गुणवत्ता और प्रासंगिकता की चुनौती:** निष्ठा कार्यक्रम के तहत ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किए गए हैं किंतु कई स्थानों पर प्रशिक्षण सामग्री शिक्षकों की स्थानीय आवश्यकताओं और वास्तविक शिक्षण परिदृश्य से मेल नहीं खाती। प्रशिक्षण सत्र अक्सर अत्यधिक सैद्धांतिक होते हैं जिससे शिक्षकों के लिए उन्हें व्यवहार में लागू करना कठिन हो जाता है। साथ ही प्रशिक्षण की गति तेज होने के कारण गहन चर्चा और अनुभव साझा करने के अवसर सीमित रह जाते हैं।
- **डिजिटल अवसंरचना और तकनीकी दक्षता की कमी:** कोविड 19 के बाद निष्ठा प्रशिक्षण मुख्यतः ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किए गए। ग्रामीण या दूरस्थ क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी, स्मार्टफोन या लैपटॉप की अनुपलब्धता और तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण कई शिक्षकों को प्रशिक्षण में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। तकनीकी सीमाओं के कारण शिक्षक ऑनलाइन मॉड्यूल को समय पर पूर्ण नहीं कर पाते जिससे प्रशिक्षण की निरंतरता बाधित होती है।
- **कार्यभार और समय प्रबंधन की समस्या:** शिक्षक पहले से ही विद्यालयीय कार्य, प्रशासनिक दायित्व, सर्वेक्षण और अन्य गैर-शैक्षणिक कार्यों में व्यस्त रहते हैं। ऐसे में निष्ठा प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त समय निकालना उनके लिए चुनौतीपूर्ण बन जाता है। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षण कार्य प्रभावित होता है जिससे शिक्षक इसे अतिरिक्त बोझ के रूप में देखने लगते हैं।
- **प्रेरणा और सहभागिता की कमी:** कई शिक्षकों में प्रशिक्षण के प्रति आत्मप्रेरणा और सहभागिता की भावना का अभाव देखने को मिलता है। कुछ शिक्षक इस प्रशिक्षण को केवल औपचारिकता के रूप में लेते हैं। इसका कारण प्रशिक्षण के बाद मिलने वाली प्रगति या पुरस्कार प्रणाली की अस्पष्टता भी है। जब शिक्षक अपने प्रयासों के ठोस परिणाम नहीं देखते तो उनमें कार्यक्रम के प्रति उत्साह कम हो जाता है।
- **मूल्यांकन प्रणाली की सीमाएँ:**प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों के मूल्यांकन की प्रक्रिया प्रायः औपचारिक होती है। कई बार केवल ऑनलाइन क्विज़ या प्रमाणपत्र वितरण तक ही इसे सीमित कर दिया जाता है। शिक्षक के व्यवहारिक परिवर्तन, शिक्षण शैली में सुधार या छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार की वास्तविक जाँच नहीं होती जिससे सशक्तिकरण की वास्तविकता मापना कठिन हो जाता है।
- **प्रशासनिक और नीतिगत बाधाएँ:** कई बार निष्ठा कार्यक्रम के क्रियान्वयन में प्रशासनिक देरी, समन्वय की कमी और नीतिगत असंगतियाँ देखी जाती हैं। प्रशिक्षण के आयोजन, मॉनीटरिंग और रिपोर्टिंग की प्रक्रिया में पारदर्शिता और निरंतरता की कमी होने से कार्यक्रम की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **शिक्षण नवाचारों को व्यवहार में लाने की चुनौती:** प्रशिक्षण में सीखी गई नई शिक्षण तकनीकों, गतिविधि-आधारित शिक्षा या मूल्यांकन के नवीन तरीकों को विद्यालय स्तर पर लागू करना हमेशा संभव नहीं होता। इसका कारण संसाधनों की कमी, बड़े छात्र समूह, अपर्याप्त शिक्षण सामग्री और विद्यालयीय दबाव हैं।

6. निष्कर्ष

निष्ठा कार्यक्रम भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास को सुनिश्चित करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप एक महत्वपूर्ण और एकीकृत पहल है। यह शिक्षकों में पेशेवर दक्षता, डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व क्षमता में सकारात्मक परिवर्तन लाकर उन्हें सशक्त बनाता है। हालांकि प्रशिक्षण की गुणवत्ता, प्रासंगिकता और व्यवहारिक क्रियान्वयन से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। इन चुनौतियों के समाधान हेतु स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण सामग्री, बेहतर डिजिटल सहायता और परिणाम-आधारित मूल्यांकन को अपनाना चाहिए। इन सुधारों के माध्यम से निष्ठा कार्यक्रम शिक्षक सशक्तिकरण के लक्ष्य को पूर्ण रूप से साकार कर सकता है जिससे शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में स्थायी सुधार लाया जा सके।

सुझाव

निष्ठा कार्यक्रम को सशक्त बनाने के लिए आवश्यक है कि प्रशिक्षण सामग्री को स्थानीय आवश्यकताओं और भाषाई विविधता के अनुरूप बनाया जाए तथा इसे केवल सैद्धांतिक न रखकर व्यवहारिक और सहभागितापूर्ण बनाया जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना, इंटरनेट और तकनीकी सहायता सुनिश्चित की जानी चाहिए। शिक्षकों को प्रेरित करने हेतु प्रशिक्षण के बाद निरंतर मार्गदर्शन, मेंटरशिप व्यवस्था और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त मूल्यांकन को केवल प्रमाणपत्र तक सीमित न रखकर परिणाम-आधारित बनाया जाना चाहिए जो शिक्षक के व्यवहारिक परिवर्तन और विद्यार्थियों की सीखने की प्रगति को मापे। साथ ही प्रशिक्षण अवधि में शिक्षकों का कार्यभार कम किया जाए और इसे निरंतर व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया के रूप में अपनाया जाए।

References

[1]. पियाजे, जे. (1973)। समझना ही आविष्कार करना है: शिक्षा का भविष्य। न्यूयॉर्क: ग्रॉसमैन।

[2]. व्यगोत्स्की, एल. एस. (1978)। समाज में मन: उच्च मानसिक प्रक्रियाओं का विकास। हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन।

[3]. राव, पी., एवं राव, एस. (2018)। भारत में शिक्षक व्यावसायिक विकास और सशक्तिकरण। शिक्षा और व्यवहार पत्रिका, 9(23), 45–52।

[4]. कुमार, आर., एवं शर्मा, एम. (2020)। डिजिटल शिक्षण मंच और शिक्षक सशक्तिकरण: निष्ठा और दीक्षा का एक अध्ययन। शिक्षा एवं विकास अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 12(4), 66–74।

[5]. आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी)। (2019)। नवाचार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षक सशक्तिकरण। पेरिस: ओईसीडी प्रकाशन।

[6]. चटर्जी, पी. (2021)। भारत में प्राथमिक शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में निष्ठा की भूमिका। शिक्षक शिक्षा और अनुसंधान पत्रिका, 16(1), 78–89।

[7]. मिश्रा, ए., एवं बंसल, एस. (2022)। निष्ठा प्रशिक्षण का शिक्षण प्रभावशीलता और छात्र अधिगम परिणामों पर प्रभाव। शैक्षिक समीक्षा पत्रिका, 14(2), 122–136।

[8]. कुमार, ए., एवं सिंह, पी. (2022). निष्ठा कार्यक्रम का शिक्षक सशक्तिकरण पर प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 45(2), 112–124. https://doi.org/10.5958/2231-458X.2022.00015.7

[9]. एनसीईआरटी. (2021). निष्ठा: शिक्षक एवं विद्यालय प्रमुखों के समग्र विकास के लिए राष्ट्रीय पहल (NISHTHA Report). नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. https://doi.org/10.13140/RG.2.2.26577.38248

[10]. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार. https://doi.org/10.1080/09751122.2020.1849807

[11]. शर्मा, आर. (2023). भारत में डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौतियाँ और संभावनाएँ: निष्ठा कार्यक्रम के सन्दर्भ में एक अध्ययन. जर्नल ऑफ़ डिजिटल एजुकेशन एंड टीचिंग इनोवेशन, 7(1), 65–78. https://doi.org/10.3126/jdeti.v7i1.14567

Cite this Article:

खूब चन्द्र **एवं** प्रो० तिर्मल सिंह, "**निष्ठा कार्यक्रम की वैचारिक रूपरेखा का शिक्षक सशक्तिकरण पर प्रभाव एवं निहित चुनौतियाँ**", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 2, pp. 16-25, February 2026.*
Journal URL: https://vijact.com
***DOI:** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.14*